GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

B.A-II – Geography – (Geography of India). [1]

Topic – Climate (जलवायु)

"भारत एक उष्ण कटिबंधीय मानसूनी जलवायु वाला देश है; जिसमें मानसूनी वर्षा जलवायु का प्रमुख आधार एवं महत्वपूर्ण निर्धारक कारक होती हैं। मानसून शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के "मौसिम" शब्द से हुई है। मौसिम का अर्थ है "[पवनों की दिशा का मौसम के अनुसार उलट जाना]" भारत में अरब सागर एवं बंगाल की खाड़ी से चलने वाली हवाओं की दिशा में ऋतु अनुसार परिवर्तन हो जाता है; इसी सन्दर्भ में भारतीय जलवायु को मानसूनी जलवायु भी कहा जाता है। "मानसून का प्रथम अध्ययन अरबी भूगोलवेत्ता अल-मसूदी द्वारा किया गया था।

मौसम और जलवायु – तापमान, वायुदाब पवन और वर्षा का स्थानिक एवं कालिक वितरण :–

भारत की जलवायु को नियंत्रित करने वाले अनेक कारक हैं, जिन्हें मोटे तौर पर दो वर्गों में बाँटा जा सकता है।

(क) स्थिति तथा उच्चावच सम्बन्धी कारक तथा

(ख) वायु दाब एवं पवन सम्बन्धी कारक

(क)(i) अक्षांश (Latitude):– हम भारत की मुख्य भूमि का अक्षांशीय एवं देशान्तरीय विस्तार पहले से ही ज्ञात है [6°4' NL से 36°6' NL तक देशान्तरीय (Longitude) विस्तार 68°7' E Long से 97°25' E Long तक] हम यह भी जानते हैं कि कर्क रेखा (Tropical of Cancer) पूर्व पश्चिम दिशा में देश के मध्य भाग से गुजरती है और भारत के 8 राज्यों को काटती है (गुजरात, राजस्थान, मध्य-प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा एवं मिजोरम) इस प्रकार भारत का उत्तरी भाग शीतोष्ण कटिबंध (Temperate Zone) में और कर्क रेखा के दक्षिण में स्थित भाग उष्ण कटिबंध (Tropical zone) में पड़ता है। उष्ण कटिबंध भूमध्य रेखा के अधिक निकट होने के कारण सारा साल (वर्ष) तापमान तथा कम दैनिक और वार्षिक तापान्तर का अनुभव करता है। कर्क रेखा से उत्तर में स्थित भाग में भूमध्य रेखा से दूर होने के कारण उच्च दैनिक तथा वार्षिक तापान्तर के साथ विषम जलवायु पायी जाती है।

(ii) हिमालय पर्वत (Himalya Mountain):– उत्तर में ऊँचा हिमालय अपने सभी विस्तारों के साथ एक प्रभावी जलवायु विभाजक की भूमिका निभाती है। यह ऊँची पर्वत श्रृंखला उप महाद्वीप को उत्तरी पवनों से अभेद्य सुरक्षा प्रदान करती है जमा देने वाली ठण्डी पवन उत्तरी ध्रुवीय रेखा के निकट पैदा होती हैं और मध्य तथा पूर्वी एशिया में आर-पार बहती हैं इस प्रकार हिमालय पर्वत –

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE
MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)
Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)
Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

मानसून पवनों को रोककर उपमहाद्वीप में वर्षा का कारण बनाता है।

(iii) - **जल और स्थल का वितरण** :— भारत के दक्षिण में तीन ओर हिन्द महासागर व उत्तर की ओर ऊँची व अविच्छिन्न पर्वत श्रेणी है। स्थल की अपेक्षा जल देर से गर्म होता है और देर से ठण्डा होता है। जल और स्थल के इस विरोधी तापन के कारण भारतीय उपमहाद्वीप में विभिन्न ऋतुओं में विभिन्न वायुदाब प्रदेश विकसित हो जाते हैं। वायु दाब में भिन्नता मानसून पवनों के उत्क्रमण का कारण बनाती है।

(iv) **समुद्र तट से दूरी** :— लम्बी तटीय रेखा के कारण भारत के विस्तृत तटीय प्रदेश में समकारी जलवायु पायी जाती है। भारत के अन्दरूनी भाग समुद्र के समकारी प्रभाव से वंचित रह जाते हैं। ऐसे क्षेत्रों में विषम जलवायु पायी जाती है। यही कारण है कि मुम्बई तथा कोंकण तट के निवासी तापमान की विषमता और ऋतु परिवर्तन का अनुभव नहीं कर पाते हैं। दूसरी ओर समुद्र तट से दूर देश के आन्तरिक भागों में स्थित दिल्ली, कानपुर और अमृतसर में मौसमी परिवर्तन पूरे जीवन को प्रभावित करते हैं।

(v) **समुद्र तल से ऊँचाई** :— हमें ज्ञात होना चाहिए कि ऊँचाई के साथ-साथ तापमान में कमी (घटता) आती है। विरल वायु के कारण पर्वतीय प्रदेश मैदानों की तुलना में अधिक ठण्डे होते हैं। उदाहरणतः - आगरा और दार्जिलिंग एक ही अक्षांश पर स्थित हैं किन्तु जनवरी में आगरा का तापमान 16°C जबकि दार्जिलिंग में यह 4°C होता है।

(vi) **उच्चावच** :- भारत का भौतिक स्वरूप अथवा उच्चावच तापमान, वायुदाब पवनों की गति एवं दिशा तथा ढाल की मात्रा और वितरण को प्रभावित करता है। उदाहरणतः जून और जुलाई के बीच पश्चिमी घाट तथा असम के पवनाभिमुखी ढाल अधिक वर्षा प्राप्त करते हैं जबकि इसी दौरान पश्चिमी घाट के साथ लगा दक्षिणी पठार पवनविमुखी स्थिति के कारण कम वर्षा प्राप्त करता है।

भारतीय मौसम विभाग द्वारा भारत की जलवायु को चार ऋतुओं में विभाजित किया गया है।

[1] **शीत ऋतु** (Winter Season) :—
[2] **ग्रीष्म ऋतु** (Summer Season) :—
[3] **वर्षा ऋतु** (Rainy Season) :—
[4] **शरद ऋतु** :—

[1] इसका काल दिसम्बर से फरवरी तक माना जाता है। इस समय सूर्य की स्थिति दक्षिणायन (Southern) हो जाती है। शीत ऋतु में भारत का मौसम मध्य एवं पश्चिमी एशिया में वायुदाब के वितरण से प्रभावित होता है।

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

इस समय हिमालय के उत्तर में तिब्बत पर उच्च वायुदाब केन्द्र स्थापित हो जाता है। उत्तर-पश्चिम भारत में एक क्षीण उच्च दाब का निर्माण होता है एवं यहाँ से पवन निम्नदाब वाले क्षेत्र की ओर चलने लगती है। इसे शीतकालीन मानसून या उत्तर-पूर्वी मानसून या लौटती मानसून के नाम से जाना जाता है। लौटती मानसून से तमिलनाडु के तटीय क्षेत्रों में वर्षा होती है।

शीतकालीन मानसून

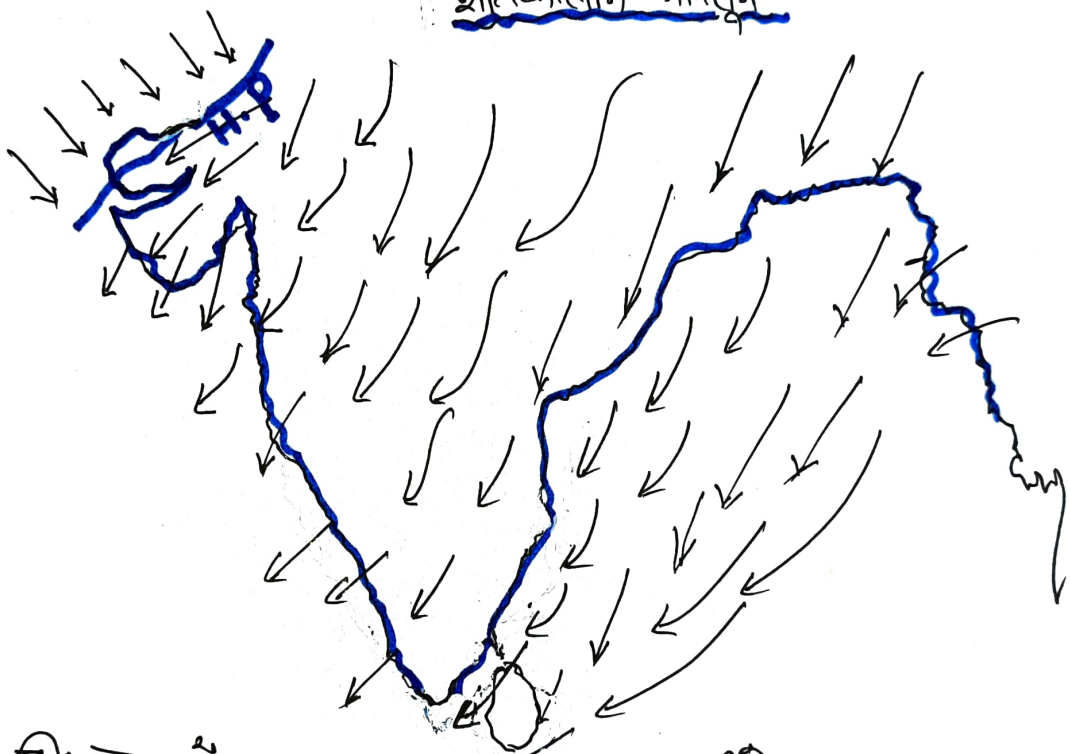

⇒ इस ऋतु में भूमध्य सागर से उठने वाला शीतोष्ण चक्रवात "पश्चिमी जेट स्ट्रीम" के सहारे भारत में प्रवेश करता है। इसे "पश्चिमी विक्षोभ (Western Disturbance)" कहते हैं। इसके द्वारा उत्तर भारत में 5 cm तक वर्षा होती है। इससे मुख्यतः से प्रभावित राज्य हैं। पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर। इससे हिमालय क्षेत्र में हिमपात भी होती है। यह वर्षा रबी फसल के लिए अधिक उपयोगी है।

[2] यह ऋतु मार्च से ~~मध्य~~ जून तक रहती है। इस समय सूर्य की स्थिति उत्तरायण होने से भारत में तापमान बढ़ जाता है। इस ऋतु में उत्तर और उत्तर पश्चिमी भारत में दिन के समय तेज गर्म हवाएँ चलती हैं। जो लू के नाम से प्रसिद्ध है। जुलाई के मध्य तक धरातल के निकट निम्न पेटी जिसे अन्तः उष्ण कटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (Inter Tropical Convergent Zone) ITCZ जुलाई में 25° अक्षांश रेखा को पार कर जाता है। इस ऋतु में स्थलीय शुष्क एवं पवन जब समुद्री आर्द्र पवनों से मिलती है तो उन जगहों पर-

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE
MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)
Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)
Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

प्रचण्ड तूफान की उत्पत्ति होती है। इसे मानसून-पूर्व-चक्रवात (Pre Monsoon Cyclone) के नाम से जाना जाता है। तूफान के साथ तेज हवाएं मूसलाधार वर्षा और ओले आते हैं। इस चक्रवात का भारत के विभिन्न जगहों पर कुछ स्थानीय नाम हैं जो निम्नलिखित हैं।

(क) नॉर्वेस्टर – पूर्वी भारत (पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा) यह चाय, जूट और चावल की खेती के लिए लाभप्रद है।
(ख) काल बैशाखी – पश्चिम-बंगाल (नॉर्वेस्टर को स्थानीय भाषा में काल-बैशाखी कहते हैं।)
(ग) चेरी ब्लॉसम – कर्नाटक एवं केरल (कॉफी के फूलों के खिलने में सहायक)
(घ) आम्र वृष्टि – दक्षिण भारत (आम के जल्दी पकने में सहायक है)।
(ङ) बोर्डो चिल्ला – नॉर्वेस्टर का असम में स्थानीय नाम है।

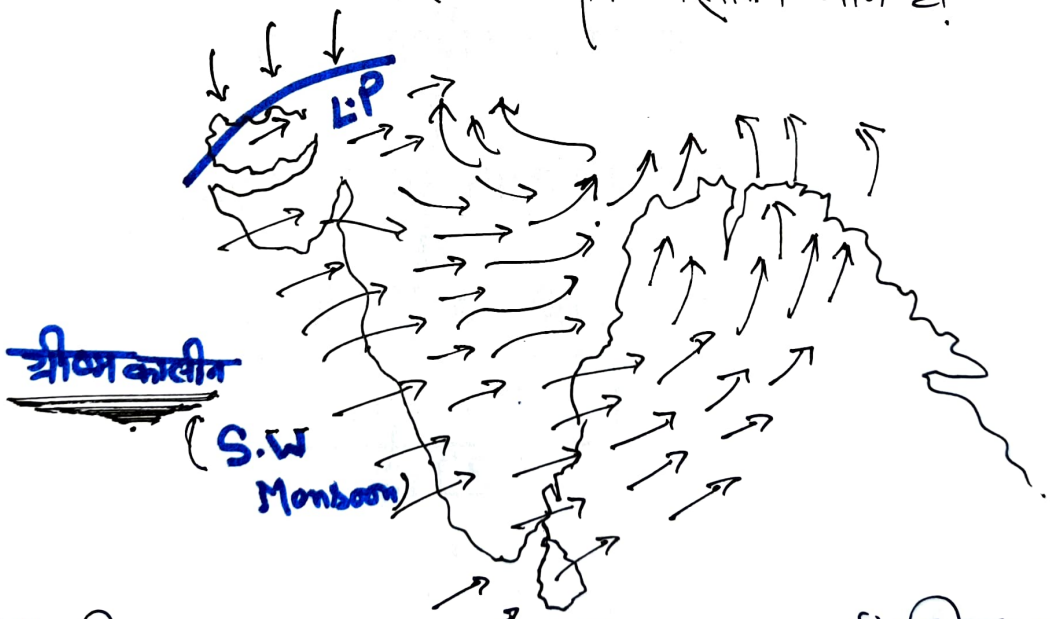

[3]- इस ऋतु का समय मध्य जून से सितम्बर तक रहता है। इस समय उत्तर-पश्चिमी भारत तथा पाकिस्तान में न्यून वायुदाब का क्षेत्र बन जाता है। अतः उष्ण कटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (ITCZ) उत्तर की ओर खिसकता हुआ शिवालिक के पर्वत-पाद तक चला जाता है। इस कारण भारतीय उपमहाद्वीप के ऊपर अरब सागर की तुलना में एक बड़े निम्न दाब का निर्माण होता है। इस निम्न दाब को भरने के लिए दक्षिणी गोलार्द्ध में चलने वाली दक्षिण पूर्वी वाणिज्यिक पवन (Trade Winds) विषुवत रेखा को पार कर पूर्व की ओर मुड़ जाती है। (फेरल के नियम के अनुसार) तथा द०-प० मानसूनी पवन का रूप ले लेती है।

Map [मानसून के आगमन की सामान्य तिथियाँ]

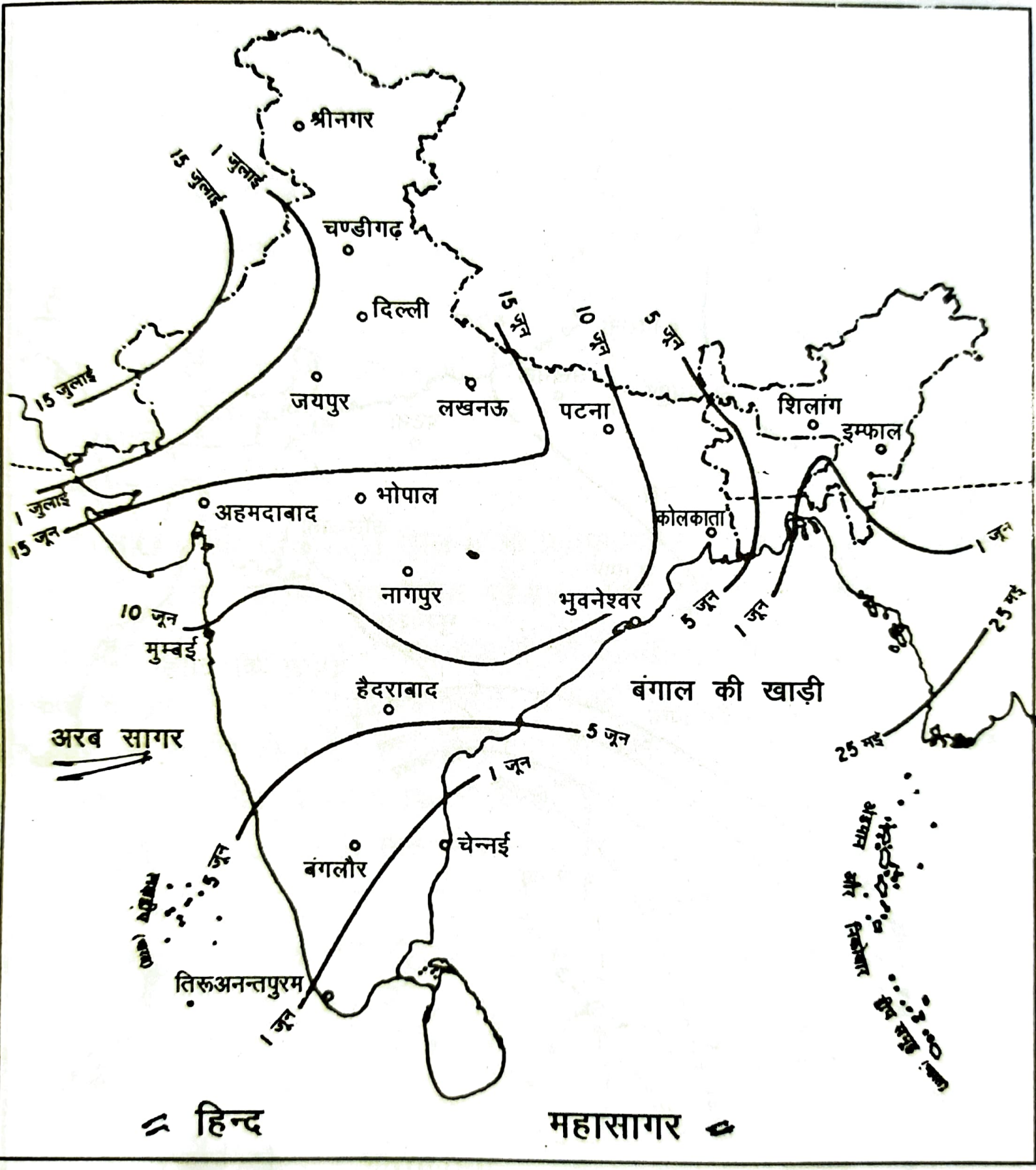

भारत : मानसून के आगमन की सामान्य तिथियाँ

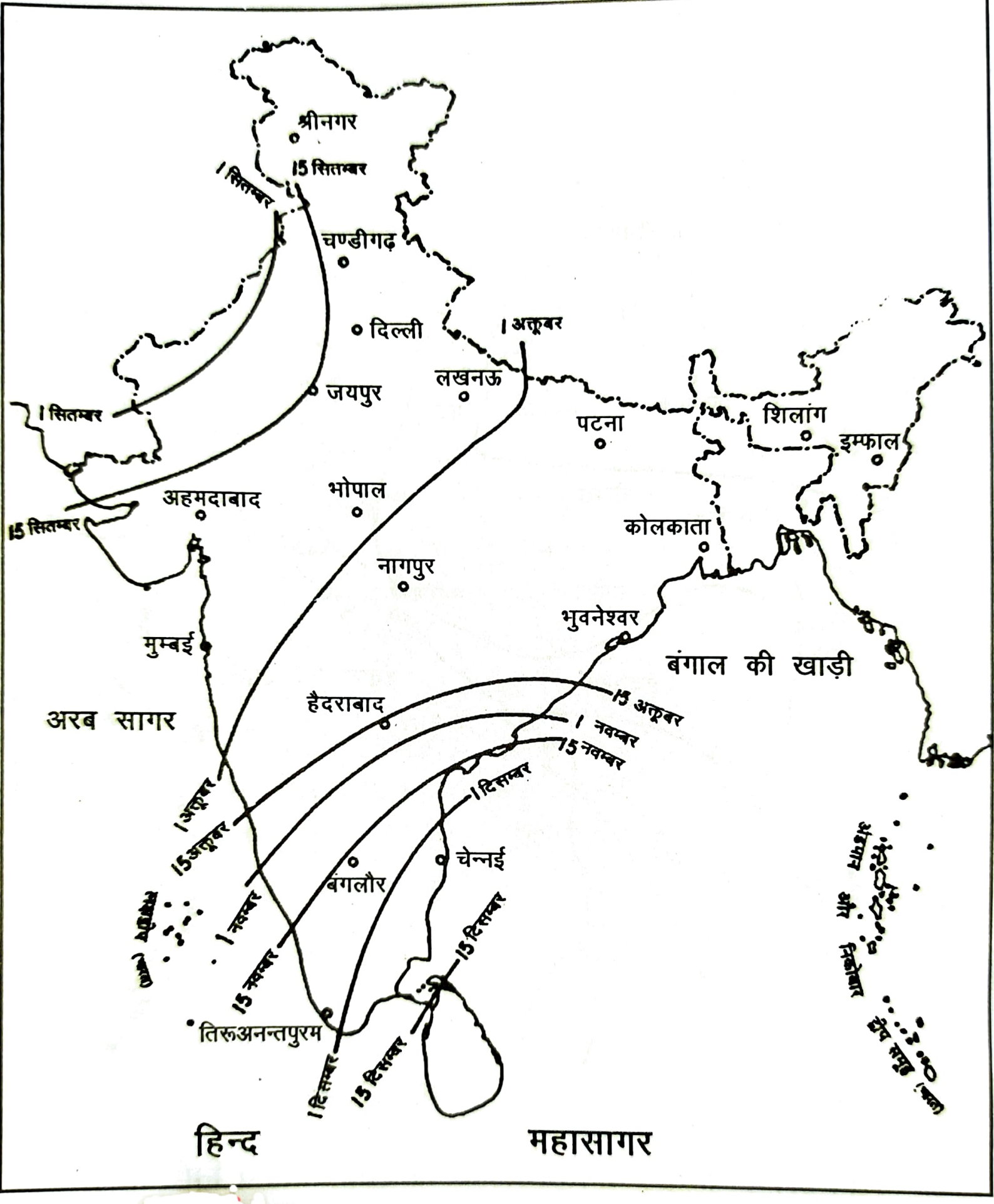

भारत : मानसून वापसी की सामान्य तिथियाँ

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE
MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)
Email.ID – gyan000005@gmail.com Phone No- 09430509798/9682491741

→ द०-प० मानसून की उत्पत्ति का सम्बन्ध 'उष्ण-पूर्वी जेट-स्ट्रीम से है।

→ द०-पं मानसून सर्वप्रथम अण्डमान एवं निकोबार तट पर 25 मई को पहुँचता है, फिर 1 जून को चेन्नई एवं तिरुवनन्तपुरम तक पहुँचता है। 5-10 जून के बीच कोलकत्ता एवं मुम्बई को छूता है। 10-15 जून के बीच पटना, अहमदाबाद, नागपुर को अपनी पकड़ में लेता है और 15 जून के बाद दिल्ली, जयपुर जैसे शहरों तक पहुँचता है।

→ भारत की प्रायद्वीपीय आकृति के कारण द०-प० मानसून दो शाखाओं में बँट जाता है।

(i) अरब सागर शाखा,
(ii) बंगाल की खाड़ी शाखा।

→ अरब सागर शाखा द्वारा भारत के पश्चिमी तट, प० घाट पर्वत, महाराष्ट्र, गुजरात एवं मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में वर्षा होती है।

→ बंगाल की खाड़ी शाखा प० बंगाल होते हुए भारत में प्रवेश करती है एवं बिहार, उत्तर प्रदेश होते हुए हरियाणा, पंजाब, राजस्थान तक पहुँचती है।

→ अरब सागर-शाखा तुलनात्मक दृष्टि से बंगाल की खाड़ी-शाखा से अधिक शक्तिशाली होता है। मानसून द्वारा लाई गयी आर्द्रता का 65% भाग अरब सागर से आता है; जबकि मात्र 35% भाग बंगाल की खाड़ी से आता है।

[4]- वर्षा के बाद शरद ऋतु का आगमन होता है जिसका समय अक्टूबर से मध्य दिसम्बर तक होता है। इसे लौटती हुई मानसून का मौसम भी कहा जाता है। द०-प० मानसून के अचानक विस्फोट (आगमन) के विपरीत मानसून निवर्तन (लौटना) धीरे-धीरे होता है। इस ऋतु में बंगाल की खाड़ी पर कई चक्रवातीय तूफान विकसित होते हैं। जो उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर चलते हैं। इन चक्रवातों से तमिलनाडु एवं श्रीलंका के तटीय भागों में पर्याप्त वर्षा होती है। तमिलनाडु के तटीय भागों में अधिकांश वर्षा उत्तर-पूर्व मानसून से अक्टूबर एवं नवम्बर के महीनों में होती है।

Map – भारत [मानसून प्रणाली की सामान्य तिथियाँ]

//

End

ध्यान दें:- **Next:.**

15 April 2021

Note-[आगे के अध्याय में भारत के जलवायु प्रदेश की समीक्षा करेंगे]

Q1. भारत के जलवायु प्रदेशों का वर्णन करें ? -